Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

मुगलकालीन राजनीतिक एवं सामाजिक स्थितिः एक परिचय

Dr. Santosh Kumar
Assistant Professor
Department of History
S.N Sinha College (M.U),
Tekari, Gaya

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

भारत के इतिहास में मुगल नाम उस मुस्लिम शासकों की लम्बी श्रृंखला के लिए प्रयुक्त होता है जिनका शासन सोलहवीं शताब्दी के तीसरे दशक में बाबर से प्रारम्भ हुआ और जो अकबर, जहांगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के समय में अपने चरमोत्कर्ष पर था। अत्यंत उच्च गौरव को प्राप्त करने वाले इस राजवंश ने अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में अपना पराभव देखा। इसके अंतिम शासक बहादुर शाह 'जफर' ने अंग्रेजी शासन द्वारा राजद्रोह के घोषित अभियोगी के रूप में रंगून में निर्वासित होकर एक कैदी के समान अपना गौरवहीन जीवन समाप्त किया।' बाबर के वंशजों की श्रृंखला अब समाप्त हो चुकी है, परन्तु उनका नाम भारतीय इतिहास के गगन पर उदयीमान नक्षत्रों की श्रृंखला के रूप में आज भी चमक रहा है।

दिल्ली सल्तनत की समाप्ति के पश्चात भारत में मुगलों ने अपनी सत्ता स्थापित की। मुगलों ने एक विशाल और मजबूत सामाज्य की स्थापना की। उनके शासनकाल में भारत का चतुर्दिक विकास हुआ। एक सुदृढ़ केंद्रीय प्रशासन की स्थापना की गई। सामाजिक सदभाव एवं सुलहकुल की भावना विकसित हुई। कृषि, उद्योग, व्यापार का विकास हुआ। फलतः आर्थिक समृद्धि बढ़ी। स्थापत्य कला और साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इस समय अनेक साहित्यिक ग्रंथों की रचना हुई जिससे मुगलकाल पर प्रकाश पड़ता है। इनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय है बाबर की आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा), अबुलफजल की आइन-ए-अकबरी तथा अकबरनामा, अब्दुल हमीद लाहौरी का पादशाहनामा तथा मिर्जा मुहम्मद काजिम की आलमगीरनामा। मुगलकाल में अनेक यूरोपीय यात्री भारत आए। इनमें महत्वपूर्ण है राल्फ फिच, पीटर मुंडी, बर्नियर तथा मनूची। इनके यात्रा

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

विवरणों से मुगलकाल पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। मुगल अभिलेखों, दस्तावेजों, सिक्कों तथा स्थापत्यकला के अवशेषों से भी मुगल इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

बाबर (1526-1530) भारत में मुगलसत्ता का संस्थापक बाबर था। यह मूलतः एशिया के एक छोटे राज्य फरगना का निवासी था। उसका आरंभिक जीवन संघर्षपूर्ण था। यह संसार के दो महान योद्धाओं, विजेताओं एवं विनाशको अमीर तिमूर और चंगेज खाँ का वंशज था पिता के पक्ष से वह तिमूर का पांचवां और माता के पक्ष से चंगेज खां मंगोल का चौदहवां वंश था अधिक विस्तार में जाये तो तुर्क इन्हें मोगोल तथा ईरानी इन्हें मुगल 'या' 'मुगल' कहते थे। आगे चलकर तुर्क ईरानी इतिहासकारों ने इनके लिए 'गुगल' शब्द का ही प्रयोग किया। फरगना का अपना राज्य सोकर उसने अफगानिस्तान की ओर ध्यान दिया। उसने काबुल पर अधिकार कर इसे अपनी शक्ति का केंद्र बनाया। काबुल से वह भारत में अपना भाग्य आजमाने बढ़ा। उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति अत्यंत दुर्बल थी। संपूर्ण भारत अनेक स्वतंत्र राज्यों में बंटा हुआ था। दिल्ली पर अफगान सुल्तान इब्राहिम लोदी का शासन था। इस समय के अन्य प्रमुख राज्य में गुजरात, मालवा बंगाल, बहामनी, विजयनगर, मेवाड, सिध, मुलतान कश्मीर तथा राजपूताना के राज्य। सीमावती पंजाब पर भी अफगानों की सत्ता थी। ऐसी स्थिति किसी भी महत्वाकाक्षी आक्रमणकारी के सर्वथा उपयुक्त भी। बाबर ने इसका लाभ उठाकर भारत पर आक्रमण किया।

बाबर ने तीन युद्धों में विजय प्राप्त कर भारत में मुगल सत्ता की स्थापना कर दी। सर्वप्रथम उसने 1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर मुगलशासन की स्थापना की। पानीपत के पश्चात 1527 में खनदी के युद्ध में राणा सांगा की परास्त कर बाबर ने अपनी स्थिति दृढ कर ली। घाघरा के युद्ध में भी 1529 में बाबर की विजय हुई। इस युद्ध के परिणामस्वरूप अफगानों की सत्ता दुर्बल पड़ गई तथा भारत में मुगल सत्ता को स्थायित्व प्राप्त हुआ। मुगल राज्य की स्थापना करने के अतिरिक्त बाबर भारत में और कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं कर सकर। लगातार युद्धों में व्यस्त रहने के कारण वह प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित नहीं कर सका। प्रशासनिक क्षेत्र में बाबर की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी चादशाही कर विकास करना उसने तुर्क-अफगानों द्वारा धारण की जानेवाली सुल्तान की उपाधि त्याग दी एवं पादशाह अथवा बादशाह की उपाधि धारण की। यह परंपरा बाबर के बाद भी चलती रही। बाबर ने दैवी शक्ति पर आधृत

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

सर्वशक्तिशाली बादशाहत की स्थापना की। इससे बादशाह की हाक्ति और प्रतिश्था में अत्यधिक वृद्धि हुई। दिसंबर, 1530 में बाबर की मृत्यू हो गई।

हुमायूँ (1530-56) बाबर का उत्तराधिकारी हुमायूँ हुआ। उसका राज्यकाल संघों की कहानी है। बाबर ने मुगल राज्य की स्थापना तो कर दी थी परंतु इसे स्थायित्व प्रदान नहीं कर सका था। अफगान अभी भी मुगलों से राजसत्ता छीनने के प्रयास में लगे हुए थे। हुमायूँ को अपने भाईयों की वैमनस्यता का भी सामना करना पड़ रहा था। हुमायूँ ने स्वयं आरंभ में अनेक राजनीतिक एवं सैनिक भूलें कि, जिस कारण उसे अपना राज्य खोकर निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा तथापि अंततः उसे विजय मिली।

हुमायूँ का मुख्य संघर्ष अफगानों के साथ हुआ। उसने 1532 में अफगान सुल्तान महमूद लोदी को दौराहा के युद्ध में परास्त कर अफगानों की शक्ति पर प्रभावशाली नियंत्रण लगा दिया परंतु शेर खाँ ने हुमायूँ को परेशान कर दिया। 1539 में चौसा के युद्ध में हुमायूँ शेर खाँ द्वारा पराजित हुआ। इस पराजय के पश्चात हुमायूँ ने शेर खाँ के साथ पुन युद्ध करने का निर्णय लिया। इस उद्देश्य से 1540 में 'यह कन्नौज पहुँचा। यहाँ भी उसे शेर खीं द्वारा पराजित होना पड़ा। कन्नौज अथवा बिलग्राम के युद्ध के बाद हुमायूँ के हाथों से राजसत्ता निकल गई। शेर खाँ शेरशाह के नाम से सम्राट बन बैठा। उसने द्वितीय अफगान राज्य की स्थापना की। हुमायूँ की वापसी को रोकने के लिए शेरशाह ने हुमायूँ का पीछा किया। अतः हुमायूँ शरण की तलाश में जगह-जगह भटकता रहा। उसके भाइयों ने भी उसकी सहायता नहीं की। विवश होकर वह भारत छोडकर ईरान चला गया।

1543 में हुमायूँ ईरान के शाह की शरण में पहुँचा। शाह ने उसे सैनिक सहायता प्रदान की। अपनी शक्ति पुनर्गठित कर हुमायूँ ने कांधार काबुल एवं बदरुशा पर अधिकार कर लिया। 1553 तक अपने भाईयों और अन्य राजनीतिक प्रतिद्वदियों पर विजय प्राप्त कर हुमायूँ ने एक बार पुनः भारत में भाग्य आजमाने का निश्चय किया। इस बार भाग्य ने उसका साथ दिया। 1545 ने हुमायूँ के प्रबल प्रतिद्वंदी शेरशाह की भी मृत्यु हो चुकी थी। अत हुमायूँ ने एक बार पुनः भारत वापस लौटने की तैयारी आरंभ कर दी। 1553 में सुल्तान इस्लाम शाह की मृत्यू ने हुमायूँ को एक सुनहला अवसर प्रदान किया। 1554 में हुमायूँ पंजाब विजय के लिए निकल पड़ा। बिना किसी प्रतिरोध के उसने

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

फरवरी, 1555 में लाहौर पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ की पंजाब विजय की सूचना पाकर अफगान लुधियाना के निकट हुमायूँ का सामना करने को तत्पर हुए परंतु हुमायूँ ने मच्छीवाड़ा के युद्ध में भी उन्हें परास्त कर दिया। जून, 1556 में मुगलों और अफगानों में सरहिंद में निर्णायक युद्ध हुआ। अफगानों की इस युद्ध में बुरी तरह पराजय हुई। जिस प्रकार पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी का पराजय न भारत में मुगलों की सत्ता स्थापित कर दी थी उसी प्रकार सरहिंद के युद्ध में सिकंदर सर की पराजय ने भारत में मुगलों की सत्ता स्थापित कर दी थी उसी प्रकार सरहिंद के युद्ध में सिकंदर सूर की पराजय ने भारत में मुगल सत्ता की पुनस्थापना कर दी। 23 जुलाई, 1555 को विजेता हुमायूँ ने दिल्ली में प्रवेश किया। एक बार पुन्नः उसका राज्याभिषेक हुआ। वह पुनः मुगल बादशाह बन गया परंतु अधिक दिनों तक इस पद पर नहीं रह सका। जनवरी, 1566 में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर उसकी मृत्यू हो गइ। तुमायूँ के जदीन पर टिप्पणी करते हुए इतिहासकार लेनपूल ने लिखा है. हुमायूँ जीवन भर ठोकरें खाता रहा और ठोकर खाकर ही उसकी मृत्यू हुई।

द्वितीय अफगान राज्य की स्थापना हुमायूँ को बिलग्राम के युद्ध में निर्णायक रूप में परास्त कर शेरशाह ने 1540 में द्वितीय अफगान राज्य की स्थापना की। उसने आगरा को अपनी राजधानी बनाई एवं अपना राज्याभिषेक करवाया। 1540-45 के मध्य शेरशाह ने अपनी सत्ता सुदृद्ध की। अनेक सैनिक अभियानों द्वारा उसने बंगाल, मालवा और राजपूताना के एक बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित किया। बुंदेलखंड में कालिंजर अभियान के दौरान वह जख्मी हो गया। फलतः मई, 1545 में उसकी मृत्यु हो गई। शेरशाह की ख्याति द्वितीय अफगान राज्य के संस्थापक से अधिक एक कुशल प्रशासक के रूप में है। उसका राज्य तो दीर्घजीवी नहीं हो सका परंतु उसके प्रशासनिक सुधारों के कुछ तत्वों, विशेषत भू-राजस्व व्यवस्था को, बाद में अकबर ने भी अपनाया।"

शेरशाह के पश्चात द्वितीय अफगान राज्य का तेजी से पतन हुआ। शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह ने कठिन परिस्थितियों में अपना प्रभाव बनाए रखा परंतु 1553 में इस्लामशाह की मृत्यू के साथ ही अफगान साम्राज्य का विभाजन गद्दी के प्रभावशाली दायेदारों के बीच हो गया। इसका सामन उठाकर हुमायूँ ने मुगल सत्ता की पुनस्स्थापना कर ली।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

अकबर (1556-1605)- गुगलयंश का सबसे अधिक प्रभावशाली बादशाह अकबर हुआ। उसकी गणना विश्व के महान शासकों में की जाती है। आदिलशाह के मंत्री हेमू को 1556 में पानीपत के द्वितीय युद्ध में पराजित कर अकबर ने भारत में मुगल शासन को स्थायित्व प्रदान किया। सैनिक अभियानों की एक लंबी श्रृंखला के पश्चात उसने लगभग समस्त भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बाँध दिया। उसने तत्कालीन राजपूत राज्यों के प्रति सामान्यतः मित्रता की नीति अपनाई। इससे उसे राजपूतों का सहयोग मिला जिसने साम्राज्य के विस्तार और सुदृढीकरण में सहायता पहुँचाई। अकबर ने सुलहकुल' की नीति अपनाई तथा धार्मिक सहिष्णुता को अपनी धार्मिक नीति का आधार बनाया उसने दीन-ए-इलाही नामक एक नया सप्रदाय नी आरंभ किया। अकबर का प्रशासनिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। उसके द्वारा स्थापित मनसबदारी व्यवस्था मुगलकाल के अंत तक चलती रही। अकबर का शासनकाल सांस्कृतिक विकास के लिए मी उल्लेखनीय है। अकबर को एक राष्ट्रीय सम्राट माना जाता है।

जहाँगीर (1605-1627)- अकबर की मृत्यु के पश्चात जहाँगीर सम्झट बना। उसने अकबर द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य की सुरक्षा की तथा इसका प्रसार भी किया। उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि नेवाड़ की विजय थी। मेवाड को नराणा अमर सिंह ने अनेक मुद्धों में पराजित होने के बाद जहाँगीर से मैत्री कार ली। दक्षिण में भी जहाँगीर ने अनेक सैनिक अभियान कर शाहजहाँ द्वारा दक्षिण के विजय का मार्ग प्रशस्त कर दिया। जहाँगीर के शासनकाल को कांधार मुगल सत्ता से स्वतंत्र हो गया।

जहाँगीर के शासनकाल की सवांधिक महत्वपूर्ण घटना है नूरजहों का राजनीतिक उत्कर्ष। 1611 में नूरजहाँ के साथ विवाह के पश्चात जहाँगीर ने सारा प्रशासन उसे ही सुपुर्द कर दिया। फलत मुगल दरबार और प्रशासन में नूरजहाँ और उसके संबंधियों का प्रभाव बढ़ने लगा। इसके प्रतिक्रियास्वरूप अनेक विद्रोह हुए जिनका मुगल सामाज्य पर घातक प्रभाव पड़ा। जहाँगीर द्वारा सिख गुरु अर्जुन की हत्या करवाये जाने से सिख की मुगल विरोधी हो गए। जहाँगीर के समय में ही 1816 में इगलैंड के समाट जेम्स प्रथम के राजदूत के रूप में सर टॉमस से भारत आया। जहाँगीर ने अंगरेजों को सूरत में व्यापारिक कोठी खोल्ने एवं भारत से व्यापार करने की अनुमति प्रदान की। इस समय से भारतीय व्यापार और राजनीति पर धीरे-धीरे अंगरेजों का प्रभाव बढ़ता चला गया। व्यक्तिगत

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

रूप से जहाँगीर और नूरजहाँ में अनेक तुम थे, परंतु उनकी राजनीतिक भूका साम्राज्य पर बुरा प्रभाव पड़ा।

शाहजहाँ (1627-1650) शाहजहाँ के साररनकाल की प्रमुख घटना है दक्षिण भारत में मुगल सता के विकास का प्रयास। दक्षिण के राज्यों अहमदनगर बीजापुर और गोलकुंडा पर प्रभावशाली नियंत्रण त्यापित करने के प्रयास किए गए जिसमें उसे कुछ सफलता भी मिली। शाहजहाँ को अपनी मध्य एशियाई नीति में सफलता नहीं मिली। कांधार और बल पर अधिकार करने का उसका प्रयास विफल हो गया। शाहजहाँ के शासनकाल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना है कि उसके चारों पुत्रों वारा, गुजा, औरंगजेब और मुराद में उत्तराधिकार का युद्ध। इस युद्ध में अंतत औरंगजेब की विजय हुई। 1658 में निर्णायक रूप से विजय प्राप्त कर औरंगजेब ने शाहजहाँ को गिरफ्तार कर लिया और 1669 में स्वयं सम्राट बन गया। कैदखाना में ही 1666 में शाहजहाँ की मृत्यू हुई। उत्तराधिकार के युद्ध का मुगल सान्द्रज्य पर घातक प्रभाव पड़ा। बादशाह के पद की गरिमा नष्ट हो गई. प्रशासनिक एवं मार्थिक व्यवस्था दुर्बल हो गई। राज्य में विद्रोहों की श्रृंखला आरंभ हो गई।

शाहजहाँ का शासनकाल सामान्यतः एक स्वर्णयुग' के रूप में देखा जाता है। इस समय कला, विशेषतः स्थापत्य कला का अभूतपूर्व विकास हुआ। चित्रकला, संगीत, शिक्षा, साहित्य का भी विकास हुआ। यह आर्थिक संपन्नता का युग था। अनेक इतिहासकारों का मानना है कि शाहजहाँ के शासनकाल में सिर्फ उपरी चमक-दमक थी। अंदर से यह खोखला हो रहा था।"

औरंगजेब आलमगीर (1059-1707) मुगलवश का अंतिम प्रभावशाली सम्राट औरंगजेब था। उत्तराधिकार के युद्ध में विजय प्राप्त कर यह सम्राट बना। औरंगजेब में सैनिक प्रतिभा थी परंतु उसकी कुछ नीतियाँ सामाज्य के अस्तित्व के लिए घातक बनी। उसकी असहिष्णुता की नीति की व्यापक प्रतिक्रिया हुई उसकी इस नीति और राजनीतिक कारणों से श्रारों, सतमामियों और बुंदेलों का विद्रोह हुआ। उसके शासनकाल में मुगलों को राजपूतों का सहयोग और समर्थन मिलना भी बंद हो गया। सिख मी मुगल विरोधी होकर संघर्ष पर उतर आए। औरंगजेब ने अपने शासन का उत्तरार्द्ध दक्षिण के शिया राज्यों एवं मराठों के दमन में लगा दिया लेकिन इसमें भी उसे पूरी सफलता नहीं मिल सकी। अनवरत युद्धों और विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य की जड़ें कमजोर कर

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

दी। प्रशासनिक एवं आर्थिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई, फलत औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही विशाल मुगल साम्राज्य का तेजी से विघटन आरंभ हो गया।

उत्तर-कालीन मुगल (1707-1857) औरंगजेब के बाद साम्राज्य की स्थिति बिगड़ने लगी। दरबारी गुटबंदी और राजवंश की आपसी प्रतिद्वदिता ने मुगल शासकों की स्थिति दुर्बल कर दी। उनमें व्यक्गित, सैनिक और प्रशासनिक गुणों का भी अभाव था। बहादुरशाह (1707-12), जहाँ दारशाह (1712-13) फर्रुखशियर (1713-19) मुहम्मदशाह रंगीला (1719-48), अहमदशाह (1748-54), आलमगीर द्वितीय (1754-69) एवं शाहआलम द्वितीय (1750-1806) के शासनकाल में साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ। 1739 में नादिरशाह और उसके बाद अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों ने साम्राज्य की शक्ति एवं प्रतिष्ठा नष्ट कर दी। मुगल साम्राज्य अवशेषों पर हैदराबाद, अकर बंगाल, सिख, जाट, मराठों के स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ। स्थिति यहाँ तक बिगड़ गई कि अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर नाममात्र का बादशाह रहा। 1857 में अंगरेजों ने उसे गद्दी से हटाकर भारत से निर्वासित कर दिया। इसके साथ ही मुगलों की बादशाहत समाप्त हो गई।

अतः अठारहवीं सदी तक आते-आते सामाजिक जीवन में काफी द्वास आ गया था। वास्तवत में यह युग भारतीय इतिहास का अंधकार-युग है। एक आधुनिक इतिहासकार के शब्दों में इस शताब्दी के अंत तथा उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ तक आते-आते रीति-रिवाज, राजनीति तथा धर्म तथा कला सर्वत्र पतनोन्मुख प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होने लगी थी। अब सर्जनात्मक प्रतिभा का द्वाप्त हो चला था, गौरवशाली परम्परा समाप्तप्रायं थी और मानवता मानों दम तोड़ने लगी थी। यह युग नपुंसकता एवं अकर्मण्यता का युग था, जिसमें प्रतिभा एवं योग्यता के लिए कोई स्थान नहीं रह पाया था खुशामद का बाजार गर्म था, व्यक्तिगत लानी ही सबकुछ थेः अमीचंद, स्वरूपचंद्र, फतेहचंद्र ख्वाजा वजीद जैसे अवसरवादियों और गद्दारों का बोलबाला था। इस युग में पुरानी सामंतशाही का एक और जहाँ जनाना निकल रही थी, वहीं दूसरी ओर एक रूध्यम वर्ग का उदय हो रहा था।

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

संदर्भ-

1. शर्मा, एस०आर०, भारत में मुगल साम्राज्य' (अनु०) पृष्ठ 696, १० 677 लेनपुल, एस० बावर पृष्त 15-16

2. शेख अबुल फजल कृत अकबरनामा' अमु० मधुरा लाल शार्मा पृ 4 एवं 5

3. इतिआस एवं गैस ए हिस्ट्री ऑफ मुगल ऑफ सेंट्रल एशिया पृ०७ एवं एच०जी०ल्ला 'आउट ऑफ हिस्ट्री पृ 575

4. हबीब एवं निजामी, दिल्ली सल्तनत पृ 46

5. हुमायूनामा (ए०एस०वेबरीज का अनु०) पृ० 2-8

6. दि मुगल इम्पायर पृ० 34-35

7. बाबरनामा, पृ० 476

8. एस०के बनर्जी हुमायूँ बादशाह पृ 5-6

9. एथ०जी बेला दि मुगल इम्पायर पृ 34, 35, 522

10. निमय अकबर पृ० 31-34, 339, 338, 342

11. स्मिथः ऑक्सफोड हिस्ट्री ऑफ इंडिया पृ० 329

12. केके दत्ता बंगाल सुबह Vol-I PP-29-52

Airo International Journal
Peer-Reviewed
Multidisciplinary

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 3
December 2025
Impact Factor: 11.9
Subject: History

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डॉ० संतोष कुमार

******